E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2022; 4(2): 155-161
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 11-06-2022
Accepted: 21-08-2022

Balendra Kumar
Research Scholar, Monad University, Hapur, Uttar Pradesh, India

Dr. Arvind Kumar
Professor, Monad University, Hapur, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author:
Balendra Kumar
Research Scholar, Monad University, Hapur, Uttar Pradesh, India

भारतीय राजनीति में युवाओं का योगदान

Balendra Kumar and Dr. Arvind Kumar

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2022.v4.i2b.331

सारांश
युवा आधुनिक भारतीय समाज की ऊर्जा, उत्साह और नवाचार का प्रतीक हैं। वे देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और राष्ट्रीय नीतियों का नवीनीकरण और संवर्धन में अहम योगदान प्रदान करते हैं। यह अध्ययन भारतीय राजनीति में युवाओं के योगदान की विश्लेषणात्मक अध्ययन के रूप में समझने का प्रयास करता है। यह अनुसंधान युवाओं के राजनीतिक उत्साह, उनके सामाजिक संज्ञान, और उनके नागरिक दायित्व के प्रति उनकी संवेदनशीलता पर ध्यान केंद्रित करता है। यह अध्ययन उन नवयुवकों की भूमिका को विश्लेषण करता है जो राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेते हैं, सार्थक योजनाओं की तैयारी में सहयोग करते हैं, और नीतियों के नवाचार में योगदान प्रदान करते हैं।
इस अध्ययन में भारतीय युवाओं के राजनीतिक प्रेरणा, उनके संघर्षों और सफलताओं की गहराई से जांच की जाएगी। यह अध्ययन युवाओं के राजनीतिक समर्थन, नेतृत्व, और शासन क्षमता के प्रति उनके विश्वास को भी परिक्षण करेगा। समापन रूप में, यह अध्ययन भारतीय राजनीति में युवाओं के योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में मदद करेगा और उनके संवेदनशीलता और सामाजिक सचेतनता के महत्व को प्रोत्साहित करेगा। इससे भारतीय युवा समुदाय को राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जो राष्ट्रीय उत्थान और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

मूल शब्दः समाज, युवा, प्रेरणा, संवेदनशीलता और सामाजिक

प्रस्तावना
आधुनिक भारत के युवा हमारे देश और दुनिया भर की समस्याओं से अवगत हैं। मौका मिलने पर वे देश की राजनीतिक स्थिति को बेहतरी के लिए बदलने को तैयार होंगे। दूसरा कारण यह हो सकता है कि युवाओं को यह बहाना बनाकर खुद को साबित करने का अवसर नहीं दिया जाता कि वे देश के शासन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए पर्याप्त अनुभवी नहीं हैं। लगभग सभी प्रमुख राजनीतिक दल पुराने नेताओं के एकाधिकार के तहत काम करते दिख रहे हैं। वृद्ध लोगों को यह एहसास होना चाहिए कि उन्हें गतिविधियों पर नियंत्रण रखने के लिए युवा लोगों के लिए रास्ता बनाना चाहिए।
युवाओं से संबंधित कई नीतिगत निर्णयों में उम्र को हमेशा एक मार्कर के रूप में इस्तेमाल किया गया है। मतदान, ड्राइविंग, शराब/सिगरेट, वयस्क फिल्में और विवाह की अनुमति उम्र के आधार पर निर्धारित की गई है। हालाँकि उम्र की परिभाषा पर व्यापक रूप से बहस हुई है संयुक्त राष्ट्र और अधिकांश "उत्तर" देशों ने 15 से 24 वर्ष की आयु वर्ग के युवाओं को वर्गीकृत किया है, जबकि दक्षिण में कई देशों ने विकासशील देशों में देर से मिले अवसरों और परिवार से देर से मिली आजादी को

इसका कारण बताते हुए उस सीमा को बढ़ा दिया है। 35 वर्ष तक. युवाओं के समाजशास्त्र की अन्य गैर-कालानुक्रमिक परंपराओं पर सिद्धांतकारों के बीच कुछ हद तक आम सहमति है। Wyn और व्हाइट द्वारा परंपराओं को (ए) युवा संक्रमण, (बी) युवा विकास, और (सी) युवा उपसंस्कृति के रूप में चित्रित किया गया है। इसमें हम जोड़ना चाहेंगे (डी) कार्ल मैनहेम का पीढ़ीगत संदर्भ सिद्धांत "युवा एक निश्चित आयु-समूह की तुलना में अधिक तरल श्रेणी है। "युवा को अक्सर उस उम्र के बीच के व्यक्ति के रूप में दर्शाया जाता है जब वह अनिवार्य शिक्षा छोड़ देता है, और वह उम्र जिस पर वह विभिन्न देशों/एजेंसियों और कुछ एजेंसी द्वारा अलग-अलग संदर्भों में अपना पहला रोजगार पाता है।" युवा ऊर्जा का प्रतीक है, और राजनीति अधिकार, प्रतिनिधित्व, न्याय और परिवर्तन के बारे में है। इस प्रकार, युवाओं और राजनीति का संश्लेषण आशा, क्रांतिकारी विचारों, परिवर्तनों और उज्जवल भविष्य के बारे में है।

यह विचार कि आबादी में युवाओं का एक बड़ा हिस्सा राजनीति में युवाओं की बड़ी भूमिका को जन्म देगा, इस धारणा पर आधारित है कि वे एक अलग राजनीतिक निर्वाचन क्षेत्र का गठन करते हैं - अलग राजनीतिक प्राथमिकताओं, दृष्टिकोण और मतदान पैटर्न के साथ आबादी का एक वर्ग। युवा देश के भविष्य की आशा हैं। हालाँकि, केवल चरित्र, बुद्धिमत्ता, 'आत्म-बलिदान' और आज्ञाकारिता वाले युवा ही राष्ट्र की नियति को आकार दे सकते हैं। ऊर्जा विहीन, जड़ता और नीरसता से ग्रस्त, मानसिक स्फूर्ति और साहस विहीन युवावस्था हमें कहीं नहीं ले जायेगी। मन और शरीर में सौम्य रूप से गठित युवावस्था केवल अपंगों की पीढ़ी को जन्म देती है। इस कारण कभी-कभी युवाओं के कंधों पर भविष्य की आशा रखने वालों के मन में घोर निराशा और हताशा आ जाती है।

युवा और शिक्षित लोग एक बढ़ते राष्ट्र की रीढ़ बनते हैं। चूँकि वे युवा हैं, उनका दिमाग ताज़ा और नवीन है। उनमें जोखिम लेने और चुनौतियां स्वीकार करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। वे भ्रष्टाचार के प्रति कम संवेदनशील होते हैं। इसलिए, किसी राष्ट्र के विकास के लिए उनका कार्य अपरिहार्य है। उनका साहस समाज के विकास में योगदान दे सकता है। युवा राजनेताओं, युवा पत्रकारों, युवा छात्रों और राष्ट्रीय राजनीति के नेताओं को आम जनता के लिए एक रोल मॉडल के रूप में काम करना चाहिए और पूरी व्यवस्था में क्रांति लानी चाहिए और कलाम के दृष्टिकोण को पूरा करना चाहिए- 2020.5 युवाओं के साथ राजनीति की भूमिका और संबंध को रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में लेना होगा, वे भ्रष्टाचार मुक्त समाज की आशा हैं जो प्रभावी ढंग से और ईमानदारी से नैतिकता को बढ़ावा देंगे। केवल सकारात्मक दृष्टिकोण ही यह सुनिश्चित करेगा कि भारतीय युवा रिश्वतखोरी के काले बादलों से घिरे देश को रोशन करेंगे। यह भविष्य की बीमारी को ठीक करने के लिए सबसे अच्छी दवा है, लेकिन वर्तमान परिदृश्य में भी महत्वपूर्ण कारक है जो हमें समस्या का व्यवस्थित और पूर्ण समाधान देगा। आज के समय में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है।

युवाओं की शक्ति

भारत सरकार युवा शक्ति का दोहन करने की आवश्यकता के प्रति सचेत है। मतदान की आयु घटाकर 18 वर्ष करने के साथ, भारत के युवा राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो गए हैं क्योंकि वे चुनाव में राजनीतिक तराजू को निर्णायक रूप से झुका सकते हैं। इस अहसास ने सभी राजनीतिक दलों को अपने राजनीतिक एजेंडे में संबंधित मुद्दों को शामिल करके युवाओं को आकर्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया है। हालाँकि, यह महत्वपूर्ण है कि युवा अपनी राजनीतिक पसंद का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करें क्योंकि वे अपने नेताओं को चुनने में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। यौवन भी जीवन का वसंत है। यह खोज और सपनों का युग है। आज भारत दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी में से एक है। कम लागत वाली कुशल तकनीकी जनशक्ति के स्रोत के रूप में पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है। यदि भारतीय युवा मजदूर वर्ग के साथ घनिष्ठ एकता के साथ काम करें तो उनमें एक सशक्त राजनीतिक शक्ति बनने की क्षमता है। उनमें भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की क्षमता है। भारतीय युवाओं में हमारे देश को विकासशील से विकसित राष्ट्र बनाने की ताकत है। यह संभावना सपनों के दायरे में नहीं है.

युवा कल के नेता हो सकते हैं। युवाओं की शक्ति पूरे विश्व की साझी संपदा है। युवाओं के चेहरे हमारे अतीत, हमारे वर्तमान और हमारे भविष्य के चेहरे हैं। युवा नेतृत्व तब होता है जब कोई युवा व्यक्ति स्वयं और/या दूसरों का नियंत्रण, प्रबंधन, निर्देशन और नेतृत्व करता है। अपने भीतर, युवा लोग यह पहचान कर नेतृत्व दिखाते हैं कि उनके लिए क्या मायने रखता है और अपने मूल्यों, उद्देश्यों, लक्ष्यों और विचारों सहित उन चीजों के प्रति सच्चे रहते हैं। अपने पूरे जीवन में, युवा लोग उदाहरण के द्वारा नेतृत्व कर सकते हैं, अनुसरण करके नेतृत्व कर सकते हैं और दृढ़ संकल्प के माध्यम से नेतृत्व कर सकते हैं। युवा नेतृत्व में ऐसे कार्य शामिल हो सकते हैं जो अन्य युवाओं, छोटे बच्चों और वयस्कों

को प्रभावित करते हैं। कुल राष्ट्रीय जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवा हैं। विश्व की लगभग 25 प्रतिशत जनसंख्या युवा है। आबादी का इतना बड़ा हिस्सा देश के विकास में अहम भूमिका निभाता है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जिस दृढ़ संकल्प और ऊर्जा के साथ युवा काम कर सकते हैं वह उन्हें देश का सबसे मूल्यवान और सक्षम नागरिक बनाता है।

युवा किसी भी राष्ट्र की प्रगति और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे देश की कुल जनसंख्या का बहुमत हिस्सा होते हैं। युवाओं के प्रयास राष्ट्र के तीव्र विकास में सहायक हो सकते हैं। युवा किसी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास की आधारशिला होते हैं। राष्ट्रीय विकास में युवाओं की अहम भूमिका है। वे राष्ट्र द्वारा निवेश के लायक महत्वपूर्ण संसाधन हैं क्योंकि वे इसकी प्रगति और विकास के लिए सबसे मूल्यवान संपत्ति हैं। विकासशील अर्थव्यवस्था में सुशिक्षित और प्रशिक्षित युवा लगभग हर क्षेत्र में अपने कौशल का योगदान देते हैं। वे इंजीनियर, डॉक्टर, प्रशासक, शिक्षक, व्याख्याता और कई अन्य क्षमताओं में अपनी सेवाएँ देते हैं। युवाओं का ऊर्जा स्तर और आत्मविश्वास उन्हें जोखिम उठाने और अपने संबंधित क्षेत्र में नई ऊंचाइयां हासिल करने के लिए प्रेरित करता है। किसी राष्ट्र में युवा, राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए अनुकूल उत्पादक और कुशल वातावरण बनाते हैं।

युवा वर्ग खराब शासन और भ्रष्टाचार का प्रतिकारक हो सकता है

उनमें परिवर्तन की शक्ति है. शिक्षा कार्यक्रमों का लक्ष्य स्कूल स्तर से ही युवाओं को सही लोगों को चुनने का महत्व सिखाना होना चाहिए जो शासन का कार्यभार संभालेंगे। परंपरागत रूप से, युवाओं को राजनीति से दूर रहने के लिए कहा गया है। युवाओं को राजनीति को देश सेवा का माध्यम मानने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्हें भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए रोकथाम, शिक्षा और रणनीतियों पर ध्यान देने के साथ भ्रष्टाचार विरोधी अभियानों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। युवा सशक्तिकरण के साथ सुशासन यथार्थवादी है। ऐसे युवाओं की निर्णायक भूमिका, जो आदर्शों के बजाय विचारों के साथ नए हैं, एक पारदर्शी नागरिक समाज संरचना की दिशा में इस आंदोलन में मदद करेंगे जो समाज के लाभ के लिए राजनीतिक प्रशासन को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए: युवा कला और खेल क्लब, जो कभी केरल के गांवों में एक प्रमुख स्थल था, की दोहरी भूमिका थी, युवाओं को जागरूकता के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना और साथ ही लोगों को अधिकारों के लिए सशक्त बनाना और विभिन्न स्तरों पर उनकी सहायता करना।

भारतीय युवा और राजनीति

हम सभी जानते हैं कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है। आज भारत में युवाओं की संख्या सबसे अधिक है। युवा समूह एक ऐसा वर्ग है जिसमें 14 वर्ष से 40 वर्ष की आयु के लोग शामिल होते हैं।

आज भारत में इस आयु वर्ग के लोगों की संख्या देश में सबसे अधिक है। यह एक ऐसा वर्ग है जो शारीरिक और मानसिक रूप से सबसे अधिक शक्तिशाली है। जो देश और अपने परिवार के विकास के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। भारत की रीढ़ युवा है। देश को बनाने में युवाओं की मुख्य भूमिका होती है। किसी भी देश का भविष्य वहां के युवाओं से ही सुंदर बनता है। लेकिन आज भारतीय युवा स्वार्थी हो गया है, वह देश की प्रगति के बारे में नहीं बल्कि सिर्फ अपने बारे में सोचता है। उन्हें रोजगार के पर्याप्त अवसर मिल रहे हैं, लेकिन अफसोस की बात यह है कि आज का युवा चाहे कितना भी पढ़-लिख गया हो, लेकिन वह दिन-ब-दिन देश और परिवार के प्रति अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों को भूलता जा रहा है।

आज भारत का युवा ऊंचाईयों को छूना चाहता है लेकिन वह भूल रहा है कि वह उन ऊंचाइयों को छूने के लिए अपनी जड़ें काट रहा है। भारत का युवा एक नई युवा क्रांति के लिए तैयार है। दुख की बात है कि कुछ लोग उन्हें रोक रहे हैं। भारत के युवा भारत में योगदान देने के बजाय विदेशों में बस जाते हैं। आज का युवा सिर्फ और सिर्फ लक्ष्य उन्मुख बना दिया गया है। इसका मतलब यह है कि आजकल के माता-पिता नहीं चाहते कि उनका बेटा या बेटी अपने काम के अलावा देश के सामाजिक कार्यों में भी योगदान दें, क्योंकि आजकल का माहौल ही कुछ ऐसा है। आलम यह हो गया है कि हर कोई सिर्फ अपना भविष्य बनाने में लगा हुआ है।

आज भारत की राजनीति में बुजुर्गों का ही बोलबाला है और चंद युवा ही राजनीति में हैं। इसका एक कारण यह है कि भारत में राजनीतिक माहौल दिन-ब-दिन बिगड़ता जा रहा है और सच्चे राजनेताओं का स्थान सत्ता और धन के लालची लोगों ने ले लिया है।

राजनीति में देशभक्ति की भावना का स्थान परिवारवाद, जातिवाद और संप्रदायवाद ने ले लिया है। जिस तरह से आए दिन राजनेताओं के भ्रष्टाचार के किस्से सामने आ रहे हैं, उससे देश के युवाओं में राजनीति के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है।

अब भारत की राजनीति में सुभाष चन्द्र बोस, शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, लोकमान्य तिलक जैसे नेता आज नहीं रहे। जो अपनी सूझबूझ और जोश से युवाओं के मन में एक नई क्रांति का संचार कर सकता है। लेकिन अफसोस की बात है कि आजादी के बाद ये नेता जो खुद की रक्षा ठीक से नहीं कर सकते, क्या वे युवाओं को देशभक्ति या क्रांति की शिक्षा देंगे?

यही कारण है कि भारत के युवा इस देश को अपना न मानकर दूसरे देशों में अपना घर तलाश रहे हैं। वे यहां की राजनीतिक सत्ता से दूर जाना चाहते हैं. इसलिए वे कोई भी ठोस कदम उठाने से पहले कई बार सोचते हैं। भारत में वोट देने वाला युवा भी अपने चुने हुए उम्मीदवार पर भरोसा नहीं करता. युवाओं को सांप्रदायिकता और राजनीति से परे अपनी सोच का विस्तार करना होगा। युवाओं को इस मामले में आगे बढ़ना होगा. और ऐसी किसी भी भावना में आपको बहने की बजाय सोच-समझकर निर्णय लेना होगा।

भारत का युवा वाकई समझदार है. ये वाकई एक अच्छी और सकारात्मक बात है जो भारत जैसे देश के लिए बहुत बड़ी बात है.

बेरोजगारी, सरकारी नौकरियों में जगह पाने के लिए रिश्वत जैसी और भी चीजें हैं, ये भी युवाओं को देश से दूर ले जाने के कारण हैं। इसलिए हमें समय-समय पर अपने युवाओं का मार्गदर्शन करना होगा। ताकि वे सही और गलत की पहचान कर सकें और अपने देश को आगे और प्रगति के पथ पर ले जाने में मदद कर सकें।

देश की भारतीय मुख्यधारा की राजनीति में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण

मनुष्य एक भावनात्मक प्राणी है. और मनुष्य भी सामाजिक प्राणी हैं। क्योंकि मानव जीवन के कई पहलू समाज से जुड़े हुए हैं। मनुष्य का हर पहलू राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होता है। मनुष्य की इन गतिविधियों को हम एक भाषा में "राजनीति" कहते हैं। राजनीति एक खेल की तरह है. जिसमें हर टीम में कई टीमें और कई खिलाड़ी मौजूद होते हैं, लेकिन जीत एक ही होती है. इसी प्रकार, कई राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं और जीतने वाली पार्टी सत्तारूढ़ पार्टी होती है। भारत की राजनीतिक व्यवस्था संविधान के तहत काम करती है। कुछ राजनेताओं और सरकारी कर्मचारियों ने देश की राजनीति की छवि और देश की हालत खराब कर दी है। लालच, भ्रष्टाचार, गरीबी, अशिक्षा ने भारतीय राजनीति को कलंकित कर दिया है। जिससे जनता के प्रति नेताओं की छवि या प्रशासन की छवि खराब हो रही है.

यह देश या समाज को बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और गरीबी जैसी समस्याओं से निजात दिला सकती है, देखा जाए तो राजनीति ही इन बड़ी समस्याओं की जनक भी रही है।

किसी भी क्षेत्र की समीक्षा एक दृष्टिकोण से नहीं की जा सकती, महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि आप अपने समाज को बदलना चाहते हैं, उसके लिए बलिदान देना चाहते हैं तो युवाओं को राजनीति में आना चाहिए।

देश के विकास के लिए अच्छे और ईमानदार लोगों का राजनीति में आना बहुत ज़रूरी है और एक मजबूत एकतरफ़ा सरकार के अलावा एक मजबूत विपक्ष भी सरकारों को समाज के हितों की सेवा के लिए प्रतिबद्ध बनाता है।

राजनीति को चतुर लोगों का खेल माना जाता है, जो देश और राज्य के हित के नाम पर अपने प्रलोभनों का फायदा उठाने की कोशिश करते हैं।

भारत के राजनीतिक जगत में चुनाव के बाद जीतने वाले राजनीतिक दल को सत्ताधारी दल से सत्ता हासिल करने की प्रक्रिया कहा जाता है। यह राजनीतिक चुनाव प्रक्रिया गाँव, जिले, तहसील से लेकर देश के चुनाव तक होती है और हम सभी जानते हैं कि सभी चुनावों का नियंत्रण और पर्यवेक्षण चुनाव आयोग द्वारा किया जाता है। भारतीय राजनीति और चुनाव की प्रक्रिया से ही यहां सफल सरकार का गठन संभव है। सरकार देश के विकास कार्यों और राष्ट्र की प्रगति में सहायक होती है। अंग्रेजों से आजादी के बाद भारत में पहला आम चुनाव 1951 में हुआ था। आज़ादी के बाद भारत का पहला चुनाव भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने जीता।

भारत सरकार का संसदीय स्वरूप एवं संरचना।

भारतीय राजनीति संसदीय और संवैधानिक ढांचे के भीतर काम करती है, जिसमें सरकार के मुखिया, राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत एक संसदीय संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य देश है। भारत की राजनीति द्वैध शासन व्यवस्था के तहत काम करती है, जिसमें एक केंद्र सरकार के रूप में कार्य करती है और दूसरी राज्य सरकार के रूप में कार्य करती है।

हमारे भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में संसदीय स्वरूप सरकार की कार्यप्रणाली को दर्शाता है। और देश का प्रधानमंत्री ही सरकार माना जाता है. वैसे तो देश का मुखिया राष्ट्रपति होता है, लेकिन पूरी कमान प्रधानमंत्री के हाथ में होती है। आपको यह तो पता ही होगा कि राष्ट्रपति देश का सर्वोच्च नागरिक होता है।

- **राजनीति में युवाओं का हस्तक्षेप जरूरी है**।

हमारे भारत देश में लोग आम चुनाव के माध्यम से

अपनी पसंद का प्रतिनिधि चुनने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र हैं। देश का प्रत्येक व्यक्ति जो 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका है, उसे स्वतंत्र रूप से अपने मत का प्रयोग करने अथवा अपनी इच्छानुसार अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है। हर पांच साल के बाद देश का आम चुनाव होता है, जिसमें आप स्वतंत्र रूप से अपना प्रतिनिधि चुन सकते हैं।

आज भारत का प्रत्येक नागरिक अपना भला-बुरा भली-भांति समझता है। युवाओं को अपनी सोच का दायरा सांप्रदायिकता और राजनीति से परे बढ़ाना होगा। युवाओं को इस मामले में बहुत सावधानी से आगे बढ़ना होगा. और ऐसी किसी भी भावना में न बहकर सोच-विचार कर निर्णय लें।

बेरोजगारी, देश के अलग-अलग मुद्दे और सरकारी नौकरियों में जगह पाने के लिए रिश्वतखोरी जैसी चीजें भी युवाओं को देश से दूर रखने का कारण हैं। इसलिए हमें समय-समय पर अपने युवाओं का मार्गदर्शन करना होगा। ताकि वे सही और गलत की पहचान कर सकें और अपने देश को आगे और प्रगति के पथ पर ले जाने में मदद कर सकें।

- **भारतीय राजनीति में युवा नेतृत्व**

भारतीय राजनीति में युवा नेतृत्व कई कारणों से महत्वपूर्ण है:

1. **ताजा परिप्रेक्ष्य**: युवा नेता राजनीतिक क्षेत्र में नए विचार और नया दृष्टिकोण लाते हैं, जो देश में बदलाव और प्रगति लाने के लिए आवश्यक है।
2. **युवाओं का प्रतिनिधित्व**: भारत एक युवा देश है, इसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा 35 वर्ष से कम उम्र का है। ऐसे युवा नेताओं का होना ज़रूरी है जो आबादी के इस बड़े हिस्से के हितों का प्रभावी ढंग से प्रतिनिधित्व कर सकें।
3. **डिजिटल प्रेमी**: युवा तकनीक-प्रेमी हैं और डिजिटल उपकरणों से अच्छी तरह वाकिफ हैं, जो राजनीतिक प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और नागरिकों के लिए सुलभ बनाने में मदद कर सकते हैं।
4. **ऊर्जा और उत्साह**: युवा नेता राजनीति में ऊर्जा और उत्साह लाते हैं, जो दूसरों को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित और प्रेरित कर सकते हैं।
5. **समग्रता**: युवा नेताओं द्वारा राजनीति में विविध और समावेशी दृष्टिकोण लाने की अधिक संभावना है, वे ऐसी नीतियों को बढ़ावा देते हैं जो उम्र, लिंग या सामाजिक-आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना आबादी के सभी वर्गों को लाभ पहुंचाती हैं।

भारत में आवश्यक राजनीतिक परिवर्तन की जांच: भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत अपने राजनीतिक इतिहास के अहम मोड़ पर खड़ा है। चूँकि राष्ट्र अनेक चुनौतियों और आकांक्षाओं से जूझ रहा है, इसलिए भारत को जिस राजनीतिक परिवर्तन की आवश्यकता है, उसकी जाँच करना अनिवार्य है। इस परिवर्तन के केंद्र में राजनीति में युवाओं की सक्रिय भागीदारी है, एक ऐसा विषय जिस पर करीब से नज़र डालने की ज़रूरत है। इस लेख में, हम इसका पता लगाएंगे भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका, भारतीय राजनीति में उनके सामने आने वाली चुनौतियाँ, और उनकी राजनीतिक भागीदारी का महत्व।

- **युवा राजनीति: परिवर्तन का इंजन**

भारत के युवा, जिन्हें अक्सर जनसांख्यिकीय लाभांश कहा जाता है, देश की आबादी के एक बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी ऊर्जा, उत्साह और ताज़ा दृष्टिकोण राजनीतिक परिवर्तन के लिए प्रेरक शक्ति हो सकते हैं। भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका सिर्फ वोट डालने तक ही सीमित नहीं है; इसका विस्तार राष्ट्र के भविष्य को आकार देने तक है। यह एक सुस्थापित तथ्य है कि जब युवा सक्रिय रूप से राजनीति में शामिल होते हैं, तो वे महत्वपूर्ण और सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

- **भारतीय राजनीति में युवाओं के सामने चुनौतियाँ**

जबकि युवाओं में परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक बनने की क्षमता है, उन्हें भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक पारंपरिक राजनीति का प्रचलन है, जो अक्सर स्थापित नेटवर्क, धन और पारिवारिक संबंधों पर निर्भर करती है। इससे युवा, महत्वाकांक्षी राजनेताओं के लिए समान अवसर पर राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, राजनीति में धन और बाहुबल का प्रभाव युवाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिए एक गंभीर चुनौती है। यह आदर्शवादी और सिद्धांतवादी युवाओं को भाग लेने से हतोत्साहित करता है, क्योंकि उन्हें चुनावी राजनीति के गंदे पानी से गुजरना मुश्किल लगता है। एक और महत्वपूर्ण चुनौती राजनीतिक प्रक्रिया के बारे में जागरूकता और शिक्षा की कमी है, जो युवाओं की अपने अधिकारों, जिम्मेदारियों और शासन की जटिलताओं को समझने की क्षमता में बाधा डालती है। हालाँकि, नागरिक शिक्षा और जागरूकता

अभियानों के माध्यम से इस चुनौती का समाधान किया जा सकता है।

- **भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका**

भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका सिर्फ राजनेता बनने तक ही सीमित नहीं है; यह सक्रिय नागरिक बनने के बारे में भी है जो अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों को जवाबदेह बनाते हैं। युवाओं ने विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों में अपनी क्षमता दिखाई है, जैसे अन्ना हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन और ग्रेटा थुनबर्ग की जलवायु सक्रियता। ये उदाहरण बताते हैं कि कैसे युवा सरकार से पारदर्शिता, जवाबदेही और जवाबदेही की मांग करके परिवर्तन के शक्तिशाली एजेंट बन सकते हैं।

- **युवा राजनीतिक सहभागिता: आगे का रास्ता**

भारतीय राजनीति में युवाओं के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने और उनकी क्षमता का एहसास करने के लिए बहु-आयामी दृष्टिकोण आवश्यक है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, राजनीतिक दलों और नेताओं को युवाओं की भागीदारी के मूल्य को पहचानना चाहिए और सक्रिय रूप से उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करना चाहिए। पार्टियों को युवा नेताओं को चुनाव लड़ने और नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए अधिक अवसर प्रदान करने चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए कि युवाओं को कम उम्र से ही राजनीतिक प्रक्रिया के बारे में अच्छी जानकारी हो, नागरिक शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, नागरिक समाज संगठन और गैर सरकारी संगठन जागरूकता अभियान चलाने और युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने, उन्हें राजनीति में प्रभावी ढंग से आगे बढ़ने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके अलावा, युवा मतदाताओं और कार्यकर्ताओं को शामिल करने के लिए डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया का उपयोग किया जा सकता है, जिससे उनके लिए जुड़ना, संगठित होना और महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी आवाज उठाना आसान हो जाएगा।

चूँकि भारत राजनीतिक परिवर्तन के शिखर पर खड़ा है, इसलिए भारतीय लोकतंत्र में युवाओं की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता। जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा भारतीय राजनीति में युवावास्तविक हैं, लेकिन वे दुर्गम नहीं हैं। सही नीतियों, शिक्षा और अवसरों के साथ, युवा भारत में आवश्यक राजनीतिक परिवर्तन के पीछे प्रेरक शक्ति हो सकते हैं। उनकी सक्रिय राजनीतिक भागीदारी न केवल भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करेगी बल्कि देश को अधिक समावेशी, प्रगतिशील और उत्तरदायी भविष्य की ओर भी ले जाएगी। अब युवाओं को परिवर्तन के इंजन के रूप में पहचानने का समय आ गया है जो भारत को एक उज्जवल और अधिक आशाजनक कल की ओर ले जा सकता है।

निष्कर्ष

अध्ययन के इस विश्लेषणात्मक अध्ययन का संघात यह सिद्ध करता है कि भारतीय युवाओं का राजनीतिक क्षेत्र में योगदान एक महत्वपूर्ण और आवश्यक पहलु है। युवाओं की नवाचार, उत्साह, और समझदारी ने राजनीतिक प्रक्रिया में नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की है। इस अध्ययन ने दिखाया है कि युवाओं के सक्रिय और समर्थ भागीदारी से राजनीतिक प्रक्रिया में सकारात्मक परिवर्तन और सुधार हो सकता है। युवाओं की सामाजिक सचेतना, राजनीतिक संज्ञान, और नागरिक दायित्व के प्रति उनकी संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। इस अध्ययन ने यह भी प्रमाणित किया है कि युवाओं के राजनीतिक समर्थन, नेतृत्व, और शासन क्षमता में वृद्धि के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। अंत में, यह अध्ययन भारतीय युवाओं के राजनीतिक योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में मदद करेगा और उनकी सामाजिक सचेतना और सामाजिक सद्भाव के प्रति उनकी दायित्वशीलता को बढ़ावा देगा। इससे भारतीय युवा समुदाय को राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जो राष्ट्रीय उत्थान और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है।

संदर्भ

1. आचार्य, मंगेश. । भारतीय राजनीति में युवाओं की भूमिका: एक राजनीतिक विश्लेषणात्मक अध्ययन। 2022.10.13140/आरजी.2.2.20441.80485।
2. रीबा, जोबा और पाणिग्रही, पी. (2021)। अरुणाचल प्रदेश में युवा नेतृत्व का उभरता हुआ पैटर्न: एक विश्लेषण। वैज्ञानिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 10.9790/0837-2602020110.
3. कुमार, सतीश और शर्मा, अमित और वर्मा, वरिंदर। (2021)। सोशल मीडिया युवाओं के बीच सामाजिक और राजनीतिक समावेशन का एक उपकरण: भारतीय विश्वविद्यालय के छात्रों का एक अध्ययन। सामाजिक विज्ञान और मानविकी के वर्तमान शोध जर्नल। 4. 82-89.

10.12944/सीआरजेएसएसएच.4.1.08.
4. पारख, दिशांत. (2020)। चुनावी राजनीति में युवाओं का प्रतिनिधित्व: भारतीय चुनाव प्रणालियों का एक विश्लेषण। जर्नल ऑफ़ पॉलिटिक्स एंड गवर्नेंस. 8. 43-59.
5. चौधरी, प्रमोद. (2023)। भारत की राजनीतिक व्यवस्था लोकतंत्र के लिए किस प्रकार लाभदायक या हानिकारक है इसका एक अध्ययन। कला और मानविकी में अनुसंधान के लिए एकीकृत जर्नल। 3. 1-6. 10.55544/इजरा.3.1.1.
6. तिवारी, भुवन एवं सिंह, भूपाल। (2023)। कोविड-19 महामारी के बाद भारतीय राजनीति पर सोशल मीडिया का प्रभाव। कला और मानविकी में अनुसंधान के लिए एकीकृत जर्नल। 3. 105-112. 10.55544/इजराह.3.3.17.
7. कुमार, आशुतोष. (2019)। भारत में राज्य स्तर पर राजनीतिक नेतृत्व: निरंतरता और परिवर्तन। भारत समीक्षा. 18. 264-287. 10.1080/14736489.2019.1616260।
8. महमूद, एस और अवान, डॉ.अब्दुल। (2019)। राजनीति में युवाओं की सक्रियता में सोशल मीडिया की भूमिका: जिला खानेवाल का एक केस अध्ययन। 5. 718-742.
9. रीबा, जोबा और पाणिग्रही, पी और छात्र, डॉक्टरेट। (2022)। अरुणाचल प्रदेश में युवाओं की सोशल मीडिया और राजनीतिक जागरूकता: चयनित जिलों का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ़ इंटरडिसिप्लिनरी साइकिल रिसर्च. खंड XIII. 284-299.
10. राज.एम, कासिमिर। (2014)। आयरलैंड और भारत में युवा नीति: एक तुलनात्मक अध्ययन।
11. सिंह, प्रेम. (2018)। हरियाणा में सोशल मीडिया और युवाओं की राजनीतिक भागीदारी।
12. सक्सेना, मयंक और अधाना, दीपक। (2020)। भारतीय राजनीति के बदलते स्वरूप में सोशल मीडिया की भूमिका: फेसबुक के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन।
13. डार, शौकत और नागरथ, डॉली। (2022)। राष्ट्र निर्माण में युवाओं की उल्लेखनीय भूमिका है। कानून एवं अर्थशास्त्र की समीक्षा. 02. 12-17.
14. चौधरी, रितेश और चौधरी, शोभा। (2020)। भारत में राजनीतिक अभियान पर सोशल मीडिया की भूमिका पर एक अध्ययन। जर्नल ऑफ़ क्रिटिकल रिव्यूज़. 7. 4078-4081. 10.31838/जेसीआर.07.04.453.
15. नाथन, ब्रायन और नाज़ुरी, नूर शुहामिन और अहमद सुहैमी, सिटी शाज़वानी और अलसागोफ़, सैयद अगिल और रहमान, सैफुल। (2021)। राजनीति में युवा नेतृत्व पर युवा दृष्टिकोण से विवेक: मलेशिया में एक केस स्टडी। 2471-2498. 10.6007/IJARBSS/v11-i11/11538.